खण्ड–5, अंक–1, वर्ष–2017, मु0पृ0 132–135, D.O.I. : 10.22445/avsp.v5i01.9865 समीक्षा एवं तकनीकी आलेख

मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त– रॉबर्ट किंग मर्टन

विजय कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ–226001, उ0प्र0, भारत
kvijay297@gmail.com

प्राप्त तिथि–31.07.2017, स्वीकृत तिथि–27.09.2017

सार– समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है। विज्ञान होने के लिए प्राकृतिक विज्ञानों के अध्ययन पद्धति को समाजशास्त्र में भी लागू किया गया। प्राकृतिक विज्ञानों के उद्‌भव का काल बहुत पुराना है। इसकी तुलना में 'समाज का विज्ञान' अभी बहुत नवीन स्थिति में है। प्राकृतिक विज्ञानों के समान समाजशास्त्र में भरोसेमन्द सिद्धान्त अभी नहीं बन पाया है। राबर्ट के0 मर्टन के सिद्धान्त के आने से पूर्व समाजशास्त्र में वृहद सिद्धान्त(टालकाट पारसन्स, पिटरिम सोरोकिन इत्यादि) आये, जो तथ्यात्मक कम दार्शनिक अधिक हैं। कुछ लघु सिद्धान्त भी हैं जो समाज की समुचित व्याख्या वैज्ञानिक तरीके से नहीं कर पाये हैं। मर्टन ने वृहद सिद्धान्त तथा लघु सिद्धान्त को अस्वीकार किया तथा इन दोनों के बीच का एक सिद्धान्त प्रस्तुत किया, जो आगे चलकर वृहद् सिद्धान्त हेतु मार्ग प्रशस्त करेगा। मर्टन ने इसको 'मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त' नाम दिया। मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त में तुलनात्मक अभावबोध, संदर्भ समूह व्यवहार, विसंगति का सिद्धान्त, दुर्खीम का आत्महत्या सिद्धान्त आदि आते हैं।

बीज शब्द– प्राकृतिक विज्ञान, वृहद सिद्धान्त, लघु सिद्धान्त, तुलनात्मक अभावबोध, विसंगति, आत्महत्या।

Middle Range Theory– Robert King Merton

Vijay Kumar
Associate Professor, Department of Sociology
B.S.N.V. P.G. College, Lucknow-226001, U.P., India
kvijay297@gmail.com

Abstract- Sociology is the science of society. Social scientists today live at a time when physical science has achieved comparatively great scope and precision of theory and experiment, a great aggregate of tools of investigation. Perhaps sociology is not yet ready for its Einstein because it has not yet found its Kepler-to say nothing of its Newton, Laplace, Max Well or Plank. Talcott Parsons is the most important structural–functional theorist. He gave the grand theory. A grand theory is a broad conceptual scheme with systems of interrelated propositions that provide a general frame of reference for the study of social processes and institutions. Merton criticized to this type of theory. He gave middle range theory. Middle range theory is principally used in sociology to guide empirical inquiry. Parsons advocated the creation of grand overarching theories; Merton favoured more limited, middle range theories.

Key words- Science, structural-functional theories, grand theory, middle range theory.

1. प्रस्तावना– 'सिद्धान्त' अवधारणाओं के माध्यम से व्यक्त किये गये सामान्यीकरण हैं। अनुसंधान प्ररचनाएँ सिद्धान्त निर्माण से सीधे–सीधे प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होते हैं। जे.एच. टर्नर ने सिद्धान्त निर्माण के चार मूल तत्वों को सम्मिलित किया है– 1. अवधारणाएँ, 2. चर, 3. कथन, 4. आकार। इन्हीं चारों के माध्यम से सिद्धान्त का निर्माण होता है। मर्टन के अनुसार, केवल उसी स्थिति में जबकि अवधारणाएँ योजनाबद्ध रूप से अन्तःसम्बन्धित हो जाती हैं, तभी सिद्धान्त का उदय आरम्भ होता है।[1] रॉबर्ट के0 मर्टन ने अपने प्रयास से समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों के निर्माण को नई दिशा दी। मर्टन का मानना था कि अब तक समाज विज्ञानों में दो तरह के सिद्धान्त प्रचलित हैं– वृहद् सिद्धान्त तथा लघु सिद्धान्त। मर्टन ने इन दोनों सिद्धान्तों के बीच का सिद्धान्त दिया जिसे 'मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त' कहा गया।

2. **मर्टन के समाजशास्त्रीय योगदान की व्याख्या**– मर्टन ने समाजशास्त्रीय सिद्धान्त निर्माण में निम्नलिखित छः प्रकार के कार्यों को सम्मिलित किया है[2]– 1. अध्ययन पद्धति, 2. सामान्य समाजशास्त्रीय अभिविन्यास, 3. समाजशास्त्रीय अवधारणाओं का विश्लेषण, 4. तथ्योत्तर समाजशास्त्रीय व्याख्याएँ, 5. समाजशास्त्र में आनुभविक या प्रयोगसिद्ध सामान्यीकरण, 6. समाजशास्त्रीय सिद्धान्त। मर्टन ने अपनी पुस्तक 'सोशल थियरी एण्ड सोशल स्ट्रक्चर'(1957) में 'मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त' को प्रस्तुत किया। मर्टन के पूर्ववर्ती सामाजिक विचारकों द्वारा दिये गये वृहद सिद्धान्तों की प्रतिक्रियास्वरूप 'मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त' का उदय हुआ। मर्टन के अध्यापक और मित्र टालकाट पारसन्स ने अपनी

पुस्तक 'द सोशल सिस्टम'[3] तथा पारसन्स तथा शिल्स के सम्पादन में 'टुवर्ड ए जनरल थियरी ऑफ एक्शन'[4] प्रकाशित हुई, जिसमें मर्टन की दृष्टि में समाज की व्याख्या दार्शनिक दृष्टिकोण से की गई प्रतीत हुई तथा ऐसे सिद्धान्त को वृहद सिद्धान्त में रखा गया। छोटी–छोटी परिकल्पनाओं में समान रूप से पाई जाने वाली अवधारणाओं से जिन सिद्धान्तों का निर्माण किया जाता है; वे ही मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त हैं। मर्टन ने इसे मिडिल रेन्ज इसलिए कहा है क्योंकि इसके ऊपर वृहद सिद्धान्त होते हैं तथा इसके नीचे वैयक्तिक अध्ययन पद्धति द्वारा या लघु समुदायों जैसे अध्ययनों पर आधारित लघु सिद्धान्त होते हैं। वृहद सिद्धान्त अभी समाजशास्त्र में नहीं बनाये जा सकते क्योंकि समाजशास्त्र का उद्भव अभी बहुत नवीन है, यह उन्नीसवीं शताब्दी की देन है। भौतिकी के मॉडल पर समाज वैज्ञानिक सिद्धान्त अभी नहीं बनाये जा सकते। यदि वृहद सिद्धान्त बनता है तो वह अवैज्ञानिक और दार्शनिकता से भरपूर होगा। साथ ही लघु सिद्धान्त भी उतने कारगर ढंग से समाज की व्याख्या नहीं कर सकता। इसलिए अभी ऐसे सिद्धान्त बनाये जायें, जिससे समाज के अध्ययन की वैज्ञानिकता बनी रहे। इसके लिए मर्टन 'मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त' को सफल मानते हैं।

समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों के निर्माण की सामान्यतया निम्नलिखित दो प्रकार की अध्ययन पद्धतियाँ प्रचलित हैं–

(क) **वृहद्(विस्तृत) सिद्धान्त–** वृहद सिद्धान्त एक वृहद् संकल्पनात्मक खाका है जो अन्तःसम्बन्धित प्रास्थापनाओं की व्यवस्था है जो सामाजिक प्रक्रियाओं और संस्थाओं के अध्ययन का एक सामान्य संदर्भ ढाँचा प्रस्तुत करता है। यह सिद्धान्त दार्शनिक व्यवस्था की मान्यताओं पर आधारित होते हैं। पारसन्स का सामाजिक व्यवस्था सिद्धान्त, सोरोकिन का सामाजिक–सांस्कृतिक गतिकी सिद्धान्त, कार्ल मार्क्स का ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धान्त वृहद सिद्धान्त के अन्तर्गत आते हैं।[5]

(ख) **लघु या सूक्ष्म सिद्धान्त**– लघु सिद्धान्त समावेशी सिद्धान्त की अपेक्षा एक आंशिक सिद्धान्त है। सूक्ष्म अध्ययनों में छोटे आकार की इकाई का चयन करके अध्ययन किया जाता है, जैसे–वैयक्तिक अध्ययन पद्धति के अन्तर्गत कतिपय व्यक्ति विशेष अथवा इकाई विशेष का चयन करके उसी का सूक्ष्म व गहन अध्ययन किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें छोटे समुदाय का भी अध्ययन किया जाता है। जैसे–रेडफील्ड द्वारा लघु समुदाय का अध्ययन।[6]

मर्टन ने मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त को परिभाषित करते हुए लिखा है कि, "मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त वे सिद्धान्त हैं जो कि एक ओर दिन–प्रतिदिन के शोध में प्रचुर मात्रा में प्रकट होने वाले लघु किन्तु जरूरी कार्यकारी परिकल्पनाओं एवं दूसरी ओर सामाजिक व्यवहार, सामाजिक संगठन व सामाजिक परिवर्तन में समस्त निरीक्षित समानताओं की व्याख्या करने वाले एक समन्वित सिद्धान्त को विकसित करने हेतु सब कुछ को सम्मिलित करते हुए किये गये व्यवस्थित प्रयत्नों के बीच में स्थित होते हैं।"[7] आज सामाजिक विज्ञानी उस समाज में रह रहे हैं, जब भौतिक विज्ञान ने बहुत विस्तार और प्रयोग तथा सिद्धान्त में यथार्थता, इसके खोज हेतु महान प्रविधियाँ और तकनीकी के उप–उत्पाद की प्रचुरता तुलनात्मक रूप से अधिक पायी है। उनको देखते हुए, बहुत से समाजशास्त्री भौतिकी के मॉडल को समाजशास्त्र में भी लागू कर रहे हैं। पूर्व का ज्ञान, आगे आने वाले ज्ञान को संचित करते हुए आगे की ओर बढ़ता है, ठीक उसी प्रकार जैसे आइन्स्टीन के सिद्धान्त संचयात्मक अनुसंधान तथा सैद्धान्तिक विरासत पर आधारित थे, उसी प्रकार समाजशास्त्र को अपने "आइन्सटीन की प्रतीक्षा करनी होगी क्योंकि अभी तक इसे न्यूटन, लाप्लास, गिब्बस्, मैक्सवेल या प्लैंक की कौन कहे केपलर भी नहीं मिले हैं।"[8] मैक्स वेबर की पुस्तक "द प्रोटेस्टेण्ट इथिक एण्ड द स्पिरिट ऑफ कैपिटालिज्म" पर हम प्रश्न नहीं उठाते– यद्यपि हम दुर्खीम के 'सुसाइड' सिद्धान्त को श्रेष्ठ स्थिति में पाते हैं।[9]

प्राकृतिक विज्ञानों के उद्भव का काल बहुत पुराना है, इसकी तुलना में 'समाज का विज्ञान' अभी बहुत नवीन स्थिति में है। प्राकृतिक विज्ञानों में भरोसेमन्द सिद्धान्त इसलिए बन पाये हैं, क्योंकि उनमें बड़े–बड़े सिद्धान्तवेत्ताओं ने हजारों–लाखों घन्टे प्रयोगशाला में काम किया है। 20वीं शताब्दी की **शुरूआत** में महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टीन ने सापेक्षता का सिद्धान्त दिया तब उन्होंने कई महीनों, वर्षों तक प्रयोगशाला में काम किया था। आइन्स्टीन ही क्यों पूर्ववर्ती वैज्ञानिकों ने जो अनुसंधान किया है उसके धरातल पर ही आइन्स्टीन खड़े हैं। आइन्स्टीन के बाद केपलर आये, फिर न्यूटन आये। वैज्ञानिक अनुसंधान का यह क्रम किसी धारावाही निर्झर की तरह चलता रहा। तब कहीं जाकर प्राकृतिक विज्ञानों में आज कुछ विश्वसनीय सिद्धान्त हैं। इधर समाजशास्त्र में आनुभविक तथ्य मुट्ठीभर हैं। यहाँ तो प्राकृतिक विज्ञानों का न्यूटन ही नहीं आया, जो सम्पूर्ण समाज को अपने परिवेश में सम्भाले, ऐसे सिद्धान्त का निर्माण समाजशास्त्र में अभी नहीं हो सकता। जब हमारे पास ढेरों आनुभविक अवलोकन होंगे, तब कहीं जाकर जिस विशाल सिद्धान्त की बात पारसन्स करते हैं, शायद उसके इर्द–गिर्द हम पहुँच सकें। हमें सिद्धान्त निर्माण का इंतजार अभी कुछ समय और भी करना है। सम्पूर्ण समाज को सम्मिलित करने वाला गुरूत्वाकर्षण जैसे सामान्य सिद्धान्त की फिलहाल समाजशास्त्र को प्रतीक्षा है।[10]

मर्टन की धारणा है कि लघु स्तर पर सिद्धान्तों के अनुभवात्मक अनुसंधान के द्वारा सम्पोषित किये जाने से पूर्णव्याप्त सिद्धान्तों के निर्माण में सहायता मिलेगी। इसलिए मर्टन ने बलपूर्वक कहा है कि अनुसंधान की प्रेरणा देने वाले लघु स्तरीय सिद्धान्तों पर ध्याान देना आवश्यक है।[11] पारसन्स तथा अन्य समाजशास्त्रीयों ने जिस व्यूह रचना की वकालत की है वह वास्तव में सिद्धान्त नहीं है, बल्कि दार्शनिक व्यवस्थायें हैं– उसमें सुझाव देने की क्षमता है, रेखांकन की भव्यता है किन्तु निरूपयोगिता है। मर्टन यह भी मानता है कि निम्न स्तर की आनुभवात्मक प्रास्थापनाओं का निर्माण किया जाना भी उतना ही निरूपयोगी होगा। इसीलिए मर्टन का सुझाव है कि समाजशास्त्र में "मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त" की आवश्यकता है।[12]

3. **आर.के. मर्टन के मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त की मुख्य विशेषताएँ–**

1. मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त सीमित अनुमानों के समूहों या युग्मों से बने होते हैं, जिनसे तार्किक आधार पर परिकल्पनायें निगमित तथा आनुभविक अन्वेषणाओं द्वारा सत्यापित होती हैं।
2. ये सिद्धान्त पृथक नहीं रहते बल्कि सिद्धान्त के विस्तृत कुल केन्द्रों में समाहित होते हैं; जैसे कि महत्वाकांक्षा स्तर, संदर्भ समूह तथा अवसर संरचना सिद्धान्त द्वारा प्रदर्शित होता है।
3. ये सिद्धान्त पर्याप्त मात्रा में सूक्ष्म होते हैं, जिससे सामाजिक व्यवहार तथा सामाजिक संरचना के विभिन्न स्तरों का वर्णन कर सके। जैसे–सामाजिक संघर्ष सिद्धान्त का प्रयोग नृजातीय तथा प्रजातीय संघर्ष, वर्ग संघर्ष तथा अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष के विश्लेषण हेतु किया जाना।
4. इस प्रकार के सिद्धान्त लघु समाजशास्त्रीय समस्याओं तथा वृहद समाजशास्त्रीय समस्याओं के अन्तर को मिटा देते हैं।
5. मार्क्स का 'ऐतिहासिक भौतिकवाद', पारसन्स का 'व्यवस्था विश्लेषण' तथा सोरोकिन का 'समन्वित समाजशास्त्र' सामान्य सैद्धान्तिक उन्मेष को व्यक्त करते हैं।
6. इसके फलस्वरूप अनेक मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त विभिन्न समाजशास्त्रीय विचारों से तादात्म्य रखते हैं।
मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त को निम्नलिखित माध्यमों द्वारा प्रदर्शित कर सकते हैं–

वृहद् सिद्धान्त– पारसन्स का सामाजिक व्यवस्था सिद्धान्त, सोरोकिन का सोशल एण्ड कल्चरल डाइनामिक्स सिद्धान्त, कार्ल मार्क्स का ऐतिहासिक भौतिकवाद सिद्धान्त।

मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त–

1. **प्राकृतिक विज्ञानों में मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त–** बायल का वायुदाब सिद्धान्त, डार्विन का प्रवालभित्ति के बनावट का सिद्धान्त, गैसों का गातिकी सिद्धान्त, गिल्बर्ट का चुम्बकीय सिद्धान्त, बीमारियों का कीटाणु सिद्धान्त, केपलर का सिद्धान्त, आइन्स्टीन का सापेक्षता का सिद्धान्त इत्यादि।
2. **समाजशास्त्र में मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त–** इमाईल दुर्खीम का आत्महत्या सिद्धान्त, पैरेटो का अभिजात्य वर्ग का परिभ्रमण सिद्धान्त, वेबर का कर्मचारी तंत्र एवं सत्ता सिद्धान्त, सी.एच. कूले, हरबर्ट मीड, स्टाऊफर, हाइमैन, ब्लूमर, मंफोर्ड कुहन इत्यादि का प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद सिद्धान्त, आर.के. मर्टन का संदर्भ समूह व्यवहार, तुलनात्मक अभावबोध, विसंगति, भूमिका पुंज सिद्धान्त, होमन्स, ब्लाउ का आर्थिक एवं सामाजिक विनिमय सिद्धान्त इत्यादि।
3. **लघु सिद्धान्त**– वैयक्तिक अध्ययन पद्धति पर आधारित सिद्धान्त, लघु समुदाय पर आधारित अध्ययन सिद्धान्त इत्यादि।

4. **मध्य सीमावर्ती सिद्धान्तों की प्रकृति–** मर्टन का कहना है कि चुम्बकीय शक्ति के सम्बन्ध में गिल्बर्ट के विचार प्रारम्भ में अत्यन्त सरल थे। जैसे पृथ्वी को एक चुम्बक के रूप में देखा जा सकता है। उसी तरह वायु के सम्बन्ध में बायल का विचार भी सरल था, कि वायुमण्डल को हवा का एक सागर कहा जा सकता है। ये सिद्धान्त कुछ उपधारणाओं को जन्म देते हैं जिनसे कुछ विशिष्ट परिकल्पनायें निर्मित की जा सकती हैं। इन परिकल्पनाओं का परीक्षण तथा सत्यापन किया जा सकता है। इसकी प्रकृति मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त की होगी तथा इसके आधार पर कालान्तर में वृहद सिद्धान्त का निर्माण किया जा सकता है।[13]

5. **मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त की अस्वीकृति**– वीरस्टीड ने मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त को अस्वीकार किया है, जिसके सम्बन्ध में मर्टन का कहना है कि वीरस्टीड ने मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त को सम्भवतः दो कारणों से अस्वीकार किया है–
(क) यह सिद्धान्त अभी बहुत नवीन है।
(ख) वीरस्टीड यह मान लेते हैं कि मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त, वृहद सिद्धान्त को पूर्णरूप से अस्वीकृत कर देता है, परन्तु यह मान लेना गलत है। मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त वृहद सिद्धान्त के लिए आधार प्रस्तुत करेगा। जोनाथन एच. टर्नर का यह मानना है कि मध्य सीमावर्ती सिद्धान्तों को आनुभवात्मक सामान्यीकरण से अधिक नहीं मानता।

6. **निष्कर्ष**– आर0 के0 मर्टन को हम एक ऐसा समाज वैज्ञानिक कहेंगे जो तथ्यों के अतिरिक्त किसी दूसरी बात पर निर्भर नहीं होना चाहता। पारसन्स का समाज–व्यवस्था का सिद्धान्त मर्टन के लिए मात्र 'सामाजिक दर्शन' है। मर्टन वृहद् सिद्धान्तों और लघु सिद्धान्तों को नकारते हुए एक मध्य का मार्ग निकालते हैं जो तथ्यों से भरपूर होगा, जिसको मध्य सीमावर्ती सिद्धान्त कहा। इस सिद्धान्त के आधार पर ही वृहद सिद्धान्तों की नींव पड़ेगी।

संदर्भ

1. पाण्डेय, रवि प्रकाश(2004) समाजशास्त्रीय सिद्धान्तः अभिगम एवं परिप्रेक्ष्य, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0 27।
2. तदैव, पृ0 33।
3. पारसन्स, टालकाट(1951) द सोशल सिस्टम, अमेरिण्ड पब्लिशिंग कम्पनी प्रा0 लि0, नई दिल्ली।
4. पारसन्स, टालकाट एवं शिल्स, एडवर्ड ए0(सम्पादन)(1954) टुवर्ड ए जनरल थियरी ऑफ एक्शन, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज मैसाचुसेट्स।
5. अब्राहम, फ्रांसिस एम0(2006) मॉर्डन सोशियोलॉजिकल थियरी ऐन इन्ट्रोडक्शन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क, पृ0 10।

6. पाण्डेय, रवि प्रकाश(2004) समाजशास्त्रीय सिद्धान्त : अभिगम एवं परिप्रेक्ष्य, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0 136।
7. मर्टन, राबर्ट किंग(1968) सोशल थियरी एण्ड स्पेशल स्ट्रक्चर, अमेरिण्ड पब्लिशिंग कम्पनी प्रा0 लि0, नई दिल्ली, पृ0 39।
8. तदैव, पृ0 47।
9. तदैव, पृ0 63।
10. दोषी, शम्भूलाल एवं त्रिवेदी, मधुसुदन(1999) उच्चतर समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवं नई दिल्ली, मु0पृ0 149–150।
11. द्विवेदी, रमेश नन्दन(1969) उच्चतर समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी, पृ0 103।
12. टर्नर, जोनाथन एच0(1995) द स्ट्रक्चर ऑफ सोशियोलॉजिकल थियरी, रावत पब्लिकेशन्स जयपुर, पृ0 88।
13. द्विवेदी, रमेश नन्दन(1969) उच्चतर समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी, पृ0 104–105।